महाराष्ट्र चैंबर ऑफ कॉमर्स, इंडस्ट्री एंड एग्रीकल्चर के तत्वावधान में आयोजित सेठ वालचंद हीराचंद मेमोरियल लेक्चर में माननीय अध्यक्ष का भाषण

छत्रपति शिवाजी महाराज की इस पावन भूमि पर सबसे पहले मैं उन्हें सादर नमन करता हूँ, उनका वंदन करता हूँ। यह समय इसलिए भी विशेष है कि इसी वर्ष छत्रपति शिवाजी महाराज के राज्याभिषेक को 350 वर्ष पूरे हो रहे हैं। इस विशेष अवसर पर मैं आप सभी को हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं देता हूँ।

महाराष्ट्र केवल एक भौगोलिक क्षेत्र का नाम भर नहीं है, यह वीरों की जन्मभूमि और कर्मभूमि है। यहाँ के लोगों ने इस पवित्र भूमि को अपने खून-पसीने से सींचा है और सभी के सामूहिक प्रयासों से इसका निर्माण हुआ है।

विविध रीति-रिवाजों और परम्पराओं वाला यह राज्य अपने समृद्ध संगीत, साहित्य और कला के लिए जाना जाता है। देश के ऐतिहासिक, सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक विकास में इसकी एक अलग पहचान है।

चाहे अजंता, एलोरा और एलिफेंटा की गुफाएं हो या 20वीं शताब्दी की आर्ट डेको शैली के भवन, वन्यजीव अभ्यारण्य हो या समुद्र तट का सौन्दर्य, गेटवे ऑफ इंडिया से लेकर पुराने ऐतिहासिक किलों तक,महाराष्ट्र की प्राकृतिक सुंदरता, विविधता और विरासत अत्यंत समृद्ध है। इसके अलावा, यहां न केवल देश के कई प्रमुख कॉर्पोरेट घराने और संगठन है, बल्कि यहां एशिया का सबसे पुराना स्टॉक एक्सचेंज बॉम्बे स्टॉक एक्सचेंज (बीएसई) भी है।

महाराष्ट्र में व्यापार, उद्योग और वाणिज्य के क्षेत्र में महाराष्ट्र चैंबर ऑफ कॉमर्स, इंडस्ट्री एंड एग्रीकल्चर का बड़ा योगदान रहा है।

आपका यह योगदान, या यूं कहें कि आपकी दशकों की यह यात्रा अद्भुत रही है। इस यात्रा में विशेष भूमिका निभाने वाले आप सभी लोगों का, प्रत्येक महानुभाव का साधुवाद।

महाराष्ट्र के वित्तीय और आर्थिक विकास हेतु यह संगठन व्यापार, उद्योग और कृषि से संबंधित विभिन्न मामलों पर प्रगतिशील और विकासोन्मुख नीतियां तैयार करने में राज्य सरकार की सहायता करता है। स्वर्गीय सेठ वालचंद हीराचंद जी की दूरदर्शिता ही थी कि उनके द्वारा वर्ष 1927 में स्थापित यह संगठन आज इतने व्यापक स्तर पर देश हित और समाज हित के लिए कार्य कर रहा है।

कल्पना कीजिए, उस समय में इस तरह से सोचना, स्वतंत्रता प्राप्ति से पहले के समय में कारोबारियों को एक मंच पर लाना और उनके बीच सामंजस्य कायम करना और अपनी सोच को कर दिखाना किसी चमत्कार से कम नहीं है।

उन्होंने स्वतंत्र भारत की उद्योग जगत की आवश्यकताओं और भारत के विकास में इसके महत्व को समझा और यही कारण था कि उन्होंने व्यापारियों के लिए अनुकूल परिवेश उपलब्ध कराने के हरसंभव प्रयास किए।

देश में विभिन्न प्रमुख क्षेत्रों का औद्योगिकीकरण करने की दिशा में उनके योगदान को कौन भूल सकता है। भारतीय परिवहन उद्योग का जनक माने जाने वाले सेठ हीराचंद जी प्रौद्योगिकी और नवोन्मेष की असीम संभावनाओं को जानते थे, जिससे भारत में औद्योगिक विकास को बल मिल सकता था और इस दिशा में उन्होने अथक प्रयास किये।

5000 से अधिक प्रत्यक्ष सदस्यों, राज्य के 800 से अधिक स्थानीय व्यापार और उद्योग संघों, और 7 लाख से अधिक व्यापारिक इकाइयों के साथ आज यह संगठन राज्य के शीर्ष चैंबर के रूप में कार्य कर रहा है।

यह महाराष्ट्र का एकमात्र ऐसा चैंबर है जिसकी शाखाएँ महाराष्ट्र के सभी जिलों और तालुकों में मौजूद हैं और यह व्यापार और उद्योग के राष्ट्रव्यापी स्तर के संगठनों से जुड़ा हुआ है। यह अपने आप में एक बहुत बड़ी उपलब्धि है।

महाराष्ट्र की राजधानी मुंबई भारत की आर्थिक राजधानी है। यह ऐसे ही नहीं कही जाती है, आर्थिक तौर पर देखें तो, पिछले कुछ वर्षों में राज्य के विकास में यह साफ-साफ दिखाई देता है। चाहे महाराष्ट्र में प्रति व्यक्ति आय हो, देश के औद्योगिक उत्पादन में इसका प्रतिशत योगदान हो, विभिन्न उद्योगों में निवेश प्राप्त करने की बात हो, राज्य ने चौतरफा प्रगति की है।

राज्य में 12 टेक्सटाइल पार्क के अलावा अमरावती में स्थित पीएम मित्रपार्क भारत में एकमात्र ब्राउनफील्ड पीएम मित्रपार्क है, जिसमें रेडी-टू-ऑपरेट इन्फ्रास्ट्रक्चर है।

आज महाराष्ट्र देश का ऑटोमोबाइल विनिर्माण और बैंकिंग, वित्तीय सेवाएं और बीमा से जुड़े कार्यकलापों का हब बनकर उभरा है। जीएसटी कलेक्शन से लेकर यूपीआई ट्रांजेक्शन तक, हर क्षेत्र में रिकॉर्ड वृद्धि हुई है।

यह उल्लेखनीय है कि पिछले वर्षों में भारत सरकार द्वारा देश के समग्र सामाजिक और आर्थिक विकास के लिए कई पहल की गई हैं। भारत में नागरिकों और उद्योगों की सुविधा के लिए तेजी से विकसित हो रहा सड़क, रेल, एयरपोर्ट, नौ-परिवहन और जलमार्ग नेटवर्क हमारे देश के अवसंरचना क्षेत्र की प्रमुख भूमिका का प्रमाण है।

भारत को स्पेस सैक्टर, ड्रोन सैक्टर और रक्षा विनिर्माण क्षेत्र सहित सभी क्षेत्रों में अग्रणी बनाने के लिए वर्तमान नीतियों में काफी बदलाव किये गए हैं। विभिन्न क्षेत्रों में नवीन योजनाओं के माध्यम से शोध और विकास को बढ़ावा दिया जा रहा है।

आज हमारा देश दुनिया में सबसे तेजी से विकसित होती अर्थव्यवस्था है। भारत दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा मोबाइल विनिर्माता देश बन गया है और हमारे यहाँ विश्व का तीसरा सबसे बड़ा स्टार्ट-अप इकोसिस्टम मौजूद

है। वैश्विक महामारी के बाद, अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (आईएमएफ़) ने भारत को वैश्विक अर्थव्यवस्था के लिए एक उम्मीद की किरण बताया है जो सरकार की दूरदर्शी नीतियों को दर्शाता है।

इसी दिशा में आगे बढ़ते हुए, इस वर्ष का केंद्रीय बजट अर्थव्यवस्था को प्रगति और समृद्धि की दिशा में आगे बढ़ाने का ब्लूप्रिंट है। वर्तमान समय में, सरकार ने पीएलआई योजनाएँ, पीएम गति शक्ति, नेशनल लॉजिस्टिक्स पॉलिसी और नेशनल सिंगल विंडो सिस्टम जैसी व्यापार अनुकूल कई नीतियाँ बनाई हैं ताकि भारत व्यापार और निवेश के लिए एक अनुकूल गंतव्य बने। इन प्रयासों का ही परिणाम है कि भारत की ईज़ ऑफ डूइंग बिज़नस रैंकिंग में सुधार आया है।

आज जब हम आत्मनिर्भर भारत की बात कर रहे हैं तो हम ज्यादा नहीं बस 2 वर्ष पहले की स्थिति को देखें। हमारे देश ने पिछले 100 वर्षों की सबसे भयानक वैश्विक महामारी का सामना किया है और उस स्थिति में भी हम पूरी दुनिया के लिए एक मिसाल बन कर उभरे। हर छोटी-बड़ी चुनौतियों और तमाम मोर्चों पर हम सभी एक साथ मिलकर लड़ रहे हैं। इस तरह की कसौटी में हमारा संकल्प, हमारा कर्म उज्ज्वल भविष्य की गारंटी भी लेकर आता है।

किसी चुनौती से हम कैसे निपट रहे हैं, कितनी मजबूती से लड़ रहे हैं, ये आने वाले अवसरों को भी तय करता है। हमारी एकजुटता, हमारी संकल्पशक्ति, हमारी इच्छाशक्ति, यही हमारी सबसे बड़ी ताकत है।

ऐसे कई उदाहरण देखने को मिले हैं जब हर देशवासी इस संकल्प से आगे बढ़ा है कि जीवन में आने वाली आपदा को अवसर में परिवर्तित करना है, आत्मनिर्भर बनना है। आत्म-निर्भर भारत बनाने का, आत्मनिर्भरता का ये भाव बरसों से हर भारतीय के मन में रही है।

पिछले कुछ वर्षों में देश की नीति और रीति में भारत की आत्मनिर्भरता का लक्ष्य सर्वोपरि रहा है और महामारी की चुनौती के बाद इस लक्ष्य को गति और बल मिला है। आत्मनिर्भर भारत अभियान उसी का परिणाम है। आत्म-निर्भर भारत अभियान यानि दूसरे देशों पर अपनी निर्भरता कम से कम।

हर वो चीज, जिसे हम आयात करने के लिए मजबूर हैं, वो न सिर्फ हमारे यहाँ बने बल्कि उससे भी आगे बढ़कर हम उसे दूसरे देशों को निर्यात कर सकें। इस लक्ष्य पर आज तेजी से काम कर रहे हैं और हमें आगे भी करने हैं।

आत्म निर्भरता का अर्थ वैश्विक बाजार से अलग होना नहीं है बल्कि विश्व का उत्पादन हब बनना है, वैश्विक सप्लाइ चेन का अभिन्न हिस्सा बनना है। हम अपने लिए भी उत्पादन करें और विश्व के लिए भी।

इसके लिए सबसे पहले आवश्यकता है - लघु उद्यमी के रूप में देश को सशक्त बनाना। हैंडीक्राफ्ट वाले हों, स्वयं सहायता समूह से जुड़े लोग हों या दूर-सुदूर गाँव में घरेलू सामान बनाने वाले हों, उनके हाथों को मजबूत करना है, हम इस प्रयास के साथ आगे बढ़ें। आसान शब्दों में कहें, तो यह समय अपने लोकल के लिए वोकल होने का समय है, हर गांव, हर कस्बे, हर जिले, हर प्रदेश, पूरे देश को आत्मनिर्भर करने का समय है।

और यहीं पर मैं समझता हूँ कि देश के हमारे युवा साथियों को, देश की महिलाओं को आगे आने की जरूरत है।

इसलिए मेरी यह अपील है कि हमारे युवा उद्यमी हों, या ग्रामीण क्षेत्र में कार्य कर रही महिलाएं हो, वो आगे आएं और इस अवसर का समुचित उपयोग करें।

इसके अलावा,मेरा यहाँ बैठे सभी लोगों से और इस संस्था से भी आग्रह है कि आत्मनिर्भर भारत अभियान को सफल करने के लिए आप एक बड़ा संकल्प लें, अपने-अपने स्तर पर कुछ नए लक्ष्य तय करें। मुझे विश्वास है कि आप जितना अपने लक्ष्य की ओर आगे बढ़ेंगे, उतना ही आत्म-निर्भर भारत का यह अभियान अपनी सफलता की ओर बढ़ेगा।

यह बहुत खुशी की बात है कि *महाराष्ट्र चैम्बर ऑफ़ कॉमर्स, इंडस्ट्री एंड एग्रीकल्चर* (एमएसीसीआईए) की महाराष्ट्र की आर्थिक प्रगति में महत्वपूर्ण भूमिका रही है। यह महाराष्ट्र के व्यापारी, कृषक, उद्यमी और उद्योगपति वर्ग के परिश्रम का ही परिणाम है, जिसके कारण आज महाराष्ट्र विकास के मार्ग पर आगे बढ़ रहा है।

आज यह राज्य व्यापार और उद्योग में नई ऊंचाइयों को हासिल कर राष्ट्र के आर्थिक विकास में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है।

अंत में, मैं फिर से महाराष्ट्र चैंबर ऑफ कॉमर्स, इंडस्ट्री एंड एग्रीकल्चर को मुझे यहां आमंत्रित करने और आप सभी के साथ संवाद करने का अवसर प्रदान करने के लिए धन्यवाद देता हूं।